साहित्य और समाज : महिलाओं की बदलती भूमिका

प्रतिभा गौली

प्रस्तावना :

साहित्य और समाज में महिलाओं की भूमिका समय के साथ निरंतर बदलती रही हैं। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, महिलाओं ने विभिन्न रूपों में समाज और साहित्य में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। कभी वे साहित्य का विषय बनीं, तो कभी उन्होंने स्वयं लेखनी उठाकर समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया।

पुराने समय में महिलाओं की भूमिका पारंपरिक रूप से सीमित थी। वे घरेलू कार्यों तक सीमित थीं और शिक्षा व स्वतंत्रता से वंचित रखी जाती थीं। साहित्य में भी वे अक्सर आदर्श नारी, पतिव्रता,त्यागमूर्ति के रूप में चित्रित की जाती थीं। लेकिन समय के साथ सामाजिक जागरूकता, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण आंदोलनों ने उनकी स्थिति में बदलाव लाया।

आधुनिक साहित्य में महिलाओं की भूमिका कहीं अधिक सशक्त और स्वतंत्र नजर आती हैं। वे अब न केवल साहित्य की पात्र हैं, बल्कि लेखिका, कवयित्री और चिंतक के रूप में भी उभर रही हैं। महिला लेखन ने नारी जीवन की सच्चाइयों को उजागर करने, उनकी समस्याओं को सामने लाने और उनके अधिकारों की मांग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं।

महिला लेखन न केवल साहित्य का अभिन्न अंग है, बल्कि यह समाज को बदलने का एक सशक्त माध्यम भी है। महिलाओं की आवाज़ साहित्य के माध्यम से समाज को नए दृष्टिकोण देती है और उनकी सशक्त भूमिका को उजागर करती है।

आज समाज और साहित्य में महिलाओं की भूमिका व्यापक हो गई है। वे केवल प्रेरणा स्रोत नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक भी बन गई हैं। साहित्य महिलाओं की आवाज़ को एक नया मंच दे रहा है। जिससे समाज में समानता और न्याय की दिशा में सुधार हो रहा है।

विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के निर्माण में नारी का योगदान महत्वपूर्ण रहा है तथा सभी युगों में किसी भी राष्ट्र की संस्कृति का मुख्य मापदंड भी, नारी की स्थिति ही रही है।

साहित्य और समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका के कई महत्वपूर्ण लाभ हैं, जो न केवल महिलाओं के विकास में सहायक हैं, बल्कि पूरे समाज को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

साहित्य में महिलाओं की बदलती भूमिका के लाभ :

नए दृष्टिकोण और विचारों की अभिव्यक्ति :

महिलाएं अब साहित्य में अपनी कहानियाँ, संघर्ष और अनुभव लिख रही हैं, जिससे समाज को विविध और प्रामाणिक दृष्टिकोण मिल रहे हैं।

सशक्तिकरण और प्रेरणा : महिला लेखिकाओं की बढ़ती संख्या से नई पीढ़ी की महिलाओं को प्रेरणा मिलती है कि वे भी अपने विचार खुलकर व्यक्त कर सकती हैं।

सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता : साहित्य के माध्यम से घरेलू हिंसा,लैगिंक भेदभाव, समानता और सशक्तिकरण जैसे मुद्दों को उठाया जा रहा है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक योगदान :

महिलाओं द्वारा लिखे गए साहित्य में समाज के बदलते मूल्यों और उनकी एतिहासिक भूमिका को संरक्षित किया जा रहा है।

समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका के लाभ :

आर्थिक विकास : महिलाओं अब विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रही हैं, जिससे अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है।

शिक्षा और साक्षरता दर में वृद्धि :महिलाएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और अपने परिवारों में भी शिक्षा को बढ़ावा दे रही हैं।

लैंगिक समानता की दिशा में प्रगती : महिलाओं की भागीदारी से समाज में पुरूषों और महिलाओं के बीच समानता की भावना विकसित हो रही है।

स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता : महिलाएं अब आत्मनिर्भर हो रही हैं, जिससे वे अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में सक्षम हैं।

सामाजिक सुधार और निति - निर्माण : महिलाओं अब राजनीति और सामाजिक सुधारों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, जिससे नीतियाँ अधिक समावेशी और न्यायसंगत बन रहीं हैं।

इन बदलावों से न केवल महिलाओं को लाभ हो रहा है, बल्कि संपूर्ण समाज अधिक समृद्ध,समान और प्रगतिशील बन रहा है

पारंपरिक समाज और साहित्य में महिलाओं की भूमिका :

पिछले कुछ सदियों तक साहित्य में महिलाओं को त्याग, सहनशीलता और पवित्रता की मूर्तियों के रूप मे दिखाया जाता था। उदाहरण के लिए, रामायण और महाभारत में सीता और द्रौपदी के चरित्र पारंपरिक सामाजिक मूल्यों को दर्शाते हैं।

आधुनिक समाज और साहित्य में महिलाओं का उभरता स्वरूप :

औद्योगिकरण, शिक्षा और नारीवादी आंदोलनों के प्रभाव से महिलाओं की स्थिति बदली। 19 वीं और 20 वीं शताब्दी में महिलाओं ने अपने अधिकारों के लिए आवाज उठानी शुरू की 1 हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य में भी महिलाओं को एक नई दृष्टि से देखा जाने लगा।

महादेवी वर्मा जी ने अपने लेखन में स्त्री - पीड़ा और उसकी आत्मनिर्भरता को उकेरा।

अमृता प्रीतम जी ने प्रेम और स्त्री स्वतंत्रता को केंद्र में रखकर लेखन किया।

इस्मत चुगताई जी ने समाज की रूढ़ियों पर प्रहार किया और महिलाओं की यथार्थवादी छवि प्रस्तुत की।

समकालीन साहित्य और समाज में महिलाओं की भूमिका :

आज साहित्य में महिलाएं सिर्फ़ पात्र नहीं,बल्कि लेखन की सशक्त प्रतिनिधि भी हैं। अब महिला लेखिकाएं नारीवाद, लैगिंक समानता, यौन हिंसा, कार्यस्थल पर भेदभाव और मानसिक स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर खुलकर लिख रही हैं।

हिंदी साहित्य में अनामिका, मृदुला गर्ग और गीताजंली श्री जैसी लेखिकाओं ने मज़बूत महीला क़िरदारों को उकेरा।

अंग्रेजी साहित्य में अरुंधति रॉय और किरण देसाई ने महिलाओं के अधिकारों और समाज में उनकी स्थिति पर लेखन किया।

महिलाओं की साहित्य में भूमिका:

" नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"

जयशंकर प्रसाद की ये पंक्तियाँ सदैव ही स्त्री के महत्व और उनके सम्मानित स्थान को दर्शाती हैं। वह कल्याणी, मंगलकारिणी, पथ - प्रदर्शिका नारी श्रद्धेय ही नहीं, साक्षात ' श्रद्धा ' का अवतार है। स्नेह
दया, करूणा, क्षमा, त्याग समर्पण, ममता आदि गुणों को अजरत्र धारा बनी नारी,जो सुख को विस्तृत कर किसी को भी दुःखी नहीं देखना चाहती।

नारी इस सृष्टि का अनुपम वरदान है। इस समग्र सृष्टि में जो कुछ सुंदर है, तरल है, सरल है उसमें नारी का ही योगदान है। अंतर्ब्रह्म रूप से सौंदर्य सम्पन्न नारी के बिना विधाता का सृष्टि चक्र अधूरा है।

प्राचीन काल में भारत में नारी को इसीलिए शक्ति, ज्ञान और ऐश्वर्य का प्रतीक मान दुर्गा, सरस्वती एवं लक्ष्मी जैसे रूप दिए गए।

भारतीय साहित्य में नारी को असाधारण स्थान प्रदान किया गया है। धार्मिक और लौकिक दोनों प्रकार के साहित्य में नारी के विविध अंकन उसकी विशिष्टता के द्योतक है। समाज - रचना तथा उसके व्यवस्थित विकास में भारतीय नारी की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है। आदिकाल से ही शास्त्रों में नारी की महत्ता और उसकी गरिमा का वर्णन करते हुए कहा गया है की नारी ब्रह्म विद्या है, सृष्टि है, शक्ति है, पवित्रता है और वह सब कुछ है, जो संसार में सर्वश्रेष्ठ रूप से दृष्टिगोचर होता है। वह जन्मदात्री, पालनहार है। मनुस्मृति में कहा गया है --

"पूजाहि गृह दीप्तय:।
स्त्रिय: श्रियश्च लोकेशुन विशेशोसस्ति कश्चन।"

किसी भी साहित्य का नारी चित्रण नारी के गुणों - अवगुणों से प्रभावित होता है और तभी वह समाज से साहित्य में भी वही स्थान प्राप्त करती है जो उसे समाज द्वारा प्रदान होता है।

चिरकाल में नारी सुकुमारता, कोमलता, वि□

हिंदी साहित्य जगत की ओर दृष्टि करें तो उसमें नारी के अनेकों रूपों का चित्रण हुआ है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में गार्गी, मैत्रेयी, लोपमुद्रा जैसी विदुषियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। मध्यकाल में मीरा बाई, अक्क महादेवी और भक्तिकाल की अन्य कवयित्रियों ने भक्ति और आध्यात्मिक साहित्य को नई ऊँचाइयाँ दी। पश्चिमी साहित्य में हिलडेगार्ड ऑफ़ बिंगेन और क्रिस्टीन डी पिज़ान जैसी महिलाओं ने दार्शनिक और साहित्यिक योगदान दिया। पश्चिम में जेन ऑस्टिन, वर्जिनिया वूल्फ, sशार्लट ब्रोंटे जैसी लैखिकाओं ने महिलाओं के अनुभवों और आंतरिक संघर्षों को अभिव्यक्ति दी। समकालीन साहित्य में महिला लेखिकाएँ सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक मुद्दों पर खुलकर लिख रही हैं।

महिलाओं की समाज में भूमिका

"नारी - निंदा मत करो, नारी नर की खान।
नारी से नर होत है, ध्रुव - प्रह्लाद समान।"

नारी समाज की जननी है - सृष्टि के सृजन में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। देव से लेकर मानव तक की जन्मदात्री नारी ही हैं। नारी के बिना समाज का कोई अस्तित्व नहीं हैं। शिक्षा के क्षेत्र में नारी ने अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर समाज को स्वस्थ और शिक्षित बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। अब नारी चहारदीवारी से मुक्त होकर विज्ञान, तकनीक, उद्योग, व्यवसाय, न्याय, अन्तरिक्ष, खेल, कृषि, अनुसन्धान और शिक्षा के क्षेत्र में अपनी सशक्त भूमिका निभा रही हैं तथा अपने ज्ञान से समाज को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही है।

स्वस्थ समाज के निर्माण में नारी की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी शरीर में रीढ़ की हड्डी की होती है। "महादेवी वर्मा" ने कहा है - "नारी केवल एक नारी ही नहीं, अपितु वह काव्य और प्रेम की प्रतिमूर्ति हैं। पुरुष विजय का भूखा होता है और नारी समर्पण की। वास्तव में भारतीय नारी पृथ्वी की कल्पलता के समान है।"

"भारतीय नारी का यहाँ कोई नहीं सानी है,
है सब पर भारी क्योंकि वह आत्माभिमानी है।
अपने गुणों से वो सदा सम्मान पाती आई है,
वह अपने गुणों का लोहा मनवाती आई है।"

"सृष्टि का आधार है नारी, प्रकृति का श्रृंगार है नारी, नारी है तो प्रेम है, बन्धन है, हर रिश्ते की डोर है नारी।"
" प्रकृति, धरती की तरह,बस देना ही जानती है नारी, प्रेम भाव, इज्जत,बस यही तो माँगती है नारी।"
"जीवन के हर पड़ाव में, बस आलंबन चाहती हैं नारी, वरना तो वो स्वयं शक्ति है और हर किसी पर भारी।"
"नारी को सरल न समझो, ईश्वरत्व का मिश्रण है नारी, हम खुद अपना सम्मान करें, और मान करें हम हैं नारी।"

निष्कर्ष:-

हिंदी साहित्य में छायावाद कल से स्त्री - विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की रचनाएं नारी सशक्तिकरण का उदाहरण है। उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी,शिवानी जैसी लेखिकाओं ने नारी मन की अंतर्द्वंद्वों को उकेरा । 21 वीं सदी में हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान बहुत अहम है। इन लेखिकाओं के कार्यों का अनुदान कई भाषाओं में किया जा रहा है। इससे हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। इन लेखिकाओं की रचनाएं समाज के अलग - अलग पहलुओं को उजागर करती हैं। इन रचनाओं से समाज में जागरूकता और बदलाव आया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष के समय जो साहित्य उभरकर सामने आता है उसमें देशकालिक परिस्थितियों के चित्रण के साथ ही साथ देश प्रेम भी परिलक्षित होता है। ऐसी महिला रचनाकारों में महादेवी वर्मा, सरोजिनी नायडू, सुभद्रा कुमारी चौहान तथा उषा देवी मिश्रा आदि का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इन महिला लेखिकाओं द्वारा लिखा गया साहित्य हिंदी साहित्य में सशक्त लेखन का प्रमाण है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1) पद्य परिमल , संपादक: "डॉ. राजेन्द्र पोवर" पृष्ठ संख्या -६९
2) निधि शर्मा , असिस्टेंट प्रोफेसर उत्तर प्रदेश
3) अंतराजाल (इंटरनेट)
4) हिंदी के प्रतिनिधि कवि , "जयशंकर प्रसाद"
5) हिंदी के प्रतिनिधि कवयित्री , "डॉ. विदुषी शर्मा"